

# डॉ. डेव मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट लिटरेचर, व्याख्यान 22, फ़िलिपियंस

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह न्यू टेस्टामेंट हिस्ट्री एंड लिटरेचर में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं, फिलिपियंस और कोलोसियंस पर व्याख्यान 22।

ठीक है, चलिए आगे बढ़ें और शुरुआत करें। और आइए प्रार्थना के साथ शुरुआत करें।

पिताजी, बाहर इतने खूबसूरत दिन बिताने के लिए धन्यवाद। और उसके कारण, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम अपना ध्यान नए नियम के उन हिस्सों पर केंद्रित कर पाएंगे जिनके बारे में हम सोचेंगे और कवर करेंगे। और पिता, मैं प्रार्थना करता हूँ कि, हमेशा की तरह, हम उस मूल संदर्भ के बारे में अधिक जागरूक और अधिक परिचित हो जाएंगे जिसमें नए नियम की किताबें लिखी गई थीं। लेकिन इसके परिणामस्वरूप, हम यह समझने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित होंगे कि वे आज भी आपके शब्द और रहस्योद्घाटन के रूप में हमसे कैसे बात करते हैं। यीशु के नाम पर, हम प्रार्थना करते हैं, आमीन।

क्या आप सभी किसी प्रश्नोत्तरी की प्रतीक्षा कर रहे हैं? मैं ऐसा उस सप्ताह में कभी नहीं करूँगा जब आपकी अंतिम परीक्षा हो, कम से कम अभी तक तो नहीं।

तो, आइए प्रारंभिक चर्च के मेल का एक और टुकड़ा खोलें, और हम फिलिप्पी में चर्च को लिखा गया एक पत्र खोलेंगे, एक किताब जिसे हम द लेटर टू द फिलिप्पियंस कहते हैं। पूछने वाली पहली बात यह है कि, तो हम फिलिप्पी शहर के बारे में क्या जानते हैं जो हमें उस संदर्भ में खुद को थोड़ा सा उन्मुख करने में मदद कर सकता है जिसमें फिलिप्पियों का पत्र लिखा गया है? सबसे पहले, फिलिप्पी शहर एक ऐसा शहर था जो आज ग्रीस का उत्तरी भाग था, जो उस समय मैसेडोनिया के नाम से जाना जाता था। दरअसल, फिलिप्पी शहर का नाम सिकंदर महान के पिता फिलिप के नाम पर रखा गया था।

आपको सिकंदर महान याद है, वह शक्तिशाली सेनापति जिसने मूल रूप से पूरी दुनिया को यूनानी बना दिया था और पूरी दुनिया में ग्रीक संस्कृति और भाषा का प्रसार किया था, जिसका राज्य मूल रूप से रोम के आने तक किसी भी अन्य साम्राज्य से बड़ा था। लेकिन फिलिप्पी शहर का नाम उनके पिता फिलिप के नाम पर रखा गया था। लेकिन पहली सदी में फिलिप्पी शहर किसी और चीज़ के लिए जाना जाता था।

इसे मूलतः रोमन उपनिवेश कहा जाता था। इसका मतलब था कि फिलिप्पी रोमन सेना के दिग्गजों का घर था, और वे बसने के लिए फिलिप्पी आएंगे। और वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि वहां वे कराधान से मुक्त हो सकते हैं।

फ़िलिपी में रहते हुए उन्हें एक प्रकार की कर-मुक्त स्थिति प्राप्त थी। और यह उस शहर के लिए है, यह उस शहर के लिए है कि पॉल फिलिपियों को पत्र संबोधित करता है, एक चर्च या चर्चों को जो वहां बस गए थे। और फ़िलिपियंस उन पुस्तकों में से एक है जिन्हें हम बहुत तेज़ी से पढ़ने जा रहे हैं और तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं।

हमने 1 कुरिन्थियों और इफिसियों जैसी पुस्तकों पर थोड़ा सा समय बिताया, लेकिन हम बहुत जल्दी फिलिपियों के पार चले जाएंगे। लेकिन मैं तुरंत पूछना चाहता हूं कि पॉल ने यह पत्र क्यों लिखा? फ़िलिपियन चर्च को एक पत्र क्यों? ऐसा प्रतीत होता है कि फ़िलिपी में बहुत सी चीज़ें चल रही हैं। सबसे पहले, पॉल जेल में अपनी परिस्थितियों को समझाने के लिए लिखता प्रतीत होता है।

याद रखें, फ़िलिपियंस उन पुस्तकों में से एक है जिन्हें हमने या नए नियम के छात्रों ने जेल पत्रियों के रूप में नामित किया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि पॉल, जाहिर तौर पर जब आप इस पत्र को पढ़ते हैं, तो पॉल अपने लेखन के दौरान अपने कारावास का स्पष्ट संदर्भ देता है। हालाँकि, संभवतः इस बिंदु पर, पॉल को घर में नज़रबंद के रूप में वर्णित करना अधिक सटीक होगा।

हम अक्सर कल्पना करते हैं, जब हम पॉल के कारावास के बारे में सोचते हैं, तो हम सोचते हैं कि वह एक सैनिक से जंजीर में बंधा हुआ है, शायद, या किसी अंधेरी कालकोठरी में मोमबत्ती की रोशनी में या जो भी हो, यह पत्र लिख रहा है। लेकिन सबसे अधिक संभावना है, पॉल के पास बहुत अधिक स्वतंत्रता है, और जब आप फिलिपियंस पढ़ते हैं तो निश्चित रूप से आपको यह धारणा मिलती है। वास्तव में, पॉल को फिलिपियों पर पूरा भरोसा था कि उसे जेल से और उसकी नजरबंदी से रिहा कर दिया जाएगा।

लेकिन पॉल ने यह पत्र जेल से लिखा है, और इसका एक उद्देश्य यह है कि वह जेल में अपनी परिस्थितियों को समझाने के लिए लिख रहा है। यह समझाने के लिए कि उसकी परिस्थितियों के बावजूद, और शायद फिलिपियों की कुछ अपेक्षाओं के बावजूद, जेल में पॉल की परिस्थितियाँ सुसमाचार की हानि के लिए नहीं निकलीं, या इसका मतलब सुसमाचार की हार नहीं है, या इसका मतलब जीत नहीं है रोमन साम्राज्य। लेकिन इसके बजाय, पॉल स्पष्ट करता है कि जेल में उसकी परिस्थितियाँ वास्तव में रोमन साम्राज्य में यीशु मसीह के लिए सुसमाचार को आगे बढ़ाने के लिए बनी हैं।

तो फिर, शायद उनके कुछ पाठक यह जानना चाहते थे कि क्या उनके कारावास का मतलब यह है कि कुछ गंभीर घटित हुआ है, या यह सुसमाचार की हानि के लिए होगा, या यीशु मसीह में उनके अपने विश्वास के लिए क्या निहितार्थ थे। और इसलिए, पॉल उन्हें आश्चस्त करने के लिए लिखते हैं कि, फिर से, जेल में उनकी स्थिति का मतलब यह नहीं है कि सुसमाचार आगे नहीं बढ़ रहा है, या इसका मतलब यह नहीं है कि यीशु मसीह प्रभु नहीं हैं। इसलिए, ऐसा लगता है कि वह यह बताने के लिए लिखता है कि वह जेल में क्यों है, या अपनी परिस्थितियों को समझाने के लिए लिखता है।

दूसरा कारण स्पष्ट रूप से यह है कि पॉल फिलिप्पियों को उनकी वित्तीय सहायता के लिए धन्यवाद देने के लिए लिखता है। अब इस पत्र की तुलना 1 कुरिन्थियों के पत्र से करना दिलचस्प है। याद रखें, 1 कुरिन्थियों में, जब पॉल कुरिन्थ शहर गया, तो उसने उनकी वित्तीय सहायता से इनकार कर दिया।

संभवतः उसने ऐसा करने का कारण कुरिन्थियों की स्थिति और वहां उनके साथ किए जाने वाले व्यवहार से जुड़ा था। इसलिए, पॉल नहीं चाहता था कि कुरिन्थियों के साथ उसके रिश्ते को संरक्षक-ग्राहक प्रकार के रिश्ते या एक ऐसे रिश्ते के रूप में भ्रमित किया जाए जहां आपके पास सोफ्रिस्ट और अन्य लोग हैं जो विभिन्न शिष्यों का ध्यान आकर्षित करने और उनका अनुसरण करने के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। शायद इस प्रकार की धारणाओं से बचने के लिए, पॉल ने कोरिंथ में किसी भी वित्तीय सहायता से इनकार कर दिया। इसके बजाय, उन्होंने अपने दम पर काम किया।

उन्होंने अपनी दुकान स्थापित की और अपना जीवन यापन किया। फिर भी फिलिप्पियन चर्च के साथ, यह कुछ बहुत ही अलग प्रतीत होता है। इसलिए, फिलिप्पी में, पॉल उनकी वित्तीय सहायता पाकर खुश था ताकि वह खुद को पूर्ण-समय मंत्रालय में समर्पित कर सके।

इसलिए, ऐसा लगता है कि यह परिस्थितियों पर निर्भर करता है कि क्या पॉल ने उन लोगों की वित्तीय सहायता स्वीकार की जिनकी उसने सेवा की थी या नहीं। और फिलिप्पियों से, उसे वित्तीय सहायता प्राप्त हुई, और वह अब इसके लिए उन्हें धन्यवाद देना चाहता है और यहां तक कि उन्हें अपने मंत्रालय में इसे जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहता है। तीसरा, और अंतिम उद्देश्य यह है कि, पॉल को ऐसा प्रतीत होता है, हालाँकि फिलिप्पी में चर्च के प्रति उसकी प्रतिक्रिया काफी हद तक सकारात्मक है, फिर भी उसे चर्च में कुछ समस्याओं का समाधान करने की आवश्यकता प्रतीत होती है।

उन समस्याओं में से एक है फूट। और मेरे लिए, कम से कम, जैसा कि मैंने पत्र पढ़ा है, यह बिल्कुल स्पष्ट नहीं है कि चर्च के भीतर कुछ विवाद या झगड़े क्यों हैं, और मुझे यकीन नहीं है कि वास्तव में ऐसा क्यों है। लेकिन जब आप पत्र पढ़ते हैं, विशेष रूप से अध्याय 2 और अध्याय 4 में, पत्र के अंत में, यह स्पष्ट है कि तर्क या विवाद हैं, और चर्च के विभाजित होने का खतरा है, इसलिए पॉल इसे शांत करने का प्रयास करने के लिए लिखता है फूट डालना या इन झगड़ों को शांत करना और चर्च को एकजुट रखना।

आप देख सकते हैं कि जब आप इसकी तुलना 1 कुरिन्थियों और अन्य जगहों से करते हैं, तो आप सबसे बड़ी चीजों में से एक देख सकते हैं जिससे पॉल इतना परेशान था जब चर्च विभाजित होने के खतरे में था। और किसी भी चीज़ से अधिक, पॉल चर्च की एकता को बनाए रखना चाहता है। और जब यह विभाजन या संघर्ष या संघर्ष के खतरे में था, तो यह उन चीजों में से एक है जिसने चर्च को लिखते समय पॉल को वास्तव में परेशान किया।

तो, फूट, तथ्य यह है कि किसी कारण से फिलिप्पी चर्च में कुछ लोग झगड़ रहे थे, और मतभेद था, और शायद चर्च विभाजन के खतरे में है। दूसरा, फिलिप्पियों के अध्याय 3 में, पॉल एक बार

फिर उसी स्थिति का सामना कर रहा है जैसा उसने गलातियों में किया था, और वह व्यक्तियों का समूह है जिसे हम यहूदीवादी कहते हैं जिन्होंने चर्च में घुसपैठ की है। कुछ लोगों ने यह भी सुझाव दिया है कि एक ऐसा समूह था जो पॉल की तरह जिद्दी था, और उसके मंत्रालय में लगभग हर मोड़ पर, उन्होंने लगभग उसका पीछा किया और उसके मंत्रालय को कम करने और शिक्षण को बढ़ावा देने की कोशिश की जिसमें कहा गया कि यीशु मसीह में विश्वास पर्याप्त नहीं था।

इसमें कहा गया है कि व्यक्ति को मूसा के कानून के प्रति समर्पित होना चाहिए। ईश्वर के सच्चे लोगों से संबंधित होने के लिए व्यक्ति को एक यहूदी के रूप में पहचान करनी चाहिए। तो, आप देख सकते हैं कि, एक अर्थ में, पॉल का सुसमाचार, जिसका वह प्रचार करने जा रहा है, यह है कि अन्यजाति केवल यीशु मसीह में विश्वास के आधार पर परमेश्वर के लोग बन सकते हैं, और उन्हें मोज़ेक कानून के प्रति समर्पित होने की आवश्यकता नहीं है।

आप देख सकते हैं कि यह उसे कहां समस्याओं में डालता है, जहां वे लोग जो यहूदी धर्म के प्रति उत्साही थे और जो लोग मूसा के कानून के प्रति उत्साही थे, जो एक परिभाषित कारक था कि आप भगवान के लोग थे, वे ही वे व्यक्ति हैं जो पॉल के लिए सबसे अधिक समस्याएं पैदा करते हैं . और इसलिए, हम फिलिप्पियों अध्याय 3 में इन यहूदीवादियों को फिर से उभरते हुए देखते हैं, और आप अध्याय 3 पढ़ते हैं और ऐसा लगता है कि पॉल उसी समस्या को संबोधित कर रहा है जो उसने गलातियों की पुस्तक में किया था। तो वे तीन, वे कम से कम तीन मुख्य उद्देश्य हैं जो मुझे लगता है कि फिलिप्पियों के लेखन के पीछे पॉल को जेल में उसकी परिस्थितियों के बारे में बताते हैं, कि उसके कारावास का मतलब कमजोरी नहीं है, यह सुसमाचार की शक्ति के साथ संघर्ष नहीं करता है, यह नहीं करता है, सुसमाचार के प्रसार में बाधा नहीं डाली है।

वह फिलिप्पियों को उनके वित्तीय समर्थन के लिए धन्यवाद देने और उन्हें इसे जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए लिखता है, और फिर वह चर्च में कुछ समस्याओं से निपटने के लिए लिखता है, कि यह किसी कारण से फूट है, झगड़ा और लड़ाई है, और फिर समस्या है यहूदीवादी एक बार फिर से घुस आए हैं और पॉल के मंत्रालय और उसके द्वारा प्रचारित सुसमाचार को कमजोर कर रहे हैं, कि गैर-यहूदी मोज़ेक कानून के अलावा, केवल यीशु मसीह में विश्वास करके भगवान के लोग बन सकते हैं। अब एक प्रश्न जो उठता है, आमतौर पर किसी भी किताब के साथ, और मुझे नहीं पता कि इसमें से कितना हिस्सा एक अच्छे साफ-सुथरे पैकेज में चीजों को रखने की हमारी इच्छा है, इसलिए हमारे पास संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए एक बहुत ही त्वरित प्रकार का साउंडबाइट या त्वरित संदर्भ है संपूर्ण पुस्तक, लेकिन आमतौर पर जब हम न्यू टेस्टामेंट की पुस्तकों को देखते हैं, तो हम यह पूछने लगते हैं कि प्रमुख विषय क्या है? क्या कोई प्राथमिक विषय है जो पूरी किताब को एकीकृत करता है? और यह फिलिप्पियों से कई बार पूछा गया है। समस्या यह है कि फ़िलिपीवासी अलग-अलग उत्तर देते प्रतीत होते हैं।

इसलिए, उदाहरण के लिए, कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि खुशी विषय है, फिलिप्पियों का मुख्य विषय है, और मैं कई पुस्तकों, विशेष रूप से लोकप्रिय पुस्तकों के बारे में अपने दिमाग से सोच सकता हूँ, जो आनंद के साथ कुछ करने की हकदार हैं। फिलिप्पियों से संबंध. तो, कुछ ने सुझाव दिया है कि आनंद मुख्य विषय है। दूसरों ने सुझाव दिया है कि पीड़ा फिलिप्पियों का मुख्य विषय है।

कुछ ने उन्हें संयोजित किया है और कहा है कि खुशी और पीड़ा मुख्य विषय हैं। अन्य लोगों ने सुझाव दिया है कि सुसमाचार में भाग लेना या साझा करना मुख्य विषय है क्योंकि आप पॉल को पाते हैं, विशेष रूप से उनके पत्रों की शुरुआत और अंत में, जैसा कि मैंने कहा, कोरिंथियंस को पॉल के वित्तीय समर्थन के माध्यम से सुसमाचार में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते हुए। इसलिए, कुछ लोगों ने कहा है कि सुसमाचार में भागीदारी प्रमुख विषय है।

एक अन्य संभावित विषय सही सोच हो सकता है। हालाँकि मैंने यह प्रस्तावित नहीं देखा है, यह एक ऐसा प्रस्ताव है जिसके बारे में मुझे लगता है कि यह निश्चित रूप से संभव है। जब आप पूरी किताब पढ़ते हैं, तो ध्यान दें कि पॉल कितनी बार पाठकों से कहता है कि ऐसा दिमाग रखो, या इस तरह सोचो, या एक ही चीज़ सोचो।

वह ऐसा बार-बार कहता है। तो, आप सोच के शब्दों के संदर्भों की संख्या, और सही ढंग से सोचने और एक ही चीज़ को सोचने के आधार पर तर्क दे सकते हैं, कि सही चीज़ सोचना फिलिपियों का एक प्रमुख विषय या प्रमुख विषय हो सकता है। एकता एक अन्य विषय है जिसके बारे में कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि यह फिलिपियों का मुख्य विषय है।

तो, फिर से, समस्या यह है कि फ़िलिपियन स्वयं इस प्रश्न के विभिन्न प्रकार के उत्तर देते प्रतीत होते हैं, कि प्रमुख विषय क्या है? तो, मेरा सुझाव यह है कि फ़िलिपियंस के पास कोई मुख्य विषय नहीं है, पॉल लिख रहा है, कई विषयों को संप्रेषित करने का प्रयास कर रहा है। मेरा मतलब है कि आप इसके बारे में सोचते हैं, यह कोई सटीक सादृश्य नहीं है, लेकिन जब आप पत्र लिखने बैठते हैं तो आप इसके बारे में सोचते हैं। कभी-कभी आप बहुत विशिष्ट उद्देश्यों के लिए पत्र लिखते हैं, जैसे कि नौकरी सुरक्षित करना या किसी समस्या का समाधान करना, जैसे कि यदि आप किसी कंपनी को पत्र लिख रहे हैं तो कोई उत्पाद।

हालाँकि, अन्य समय में, आप केवल बातें करने के लिए पत्र लिख सकते हैं। विशेष रूप से यदि आप एक सूचनात्मक पत्र लिख रहे हैं, तो आप विभिन्न विषयों पर जा सकते हैं। आप बस एक तरह की जानकारी का खुलासा कर रहे हैं या ऐसे कई विषयों से निपट रहे हैं जिनमें एक व्यापक एकीकृत विषय नहीं हो सकता है।

और मेरी राय में, फ़िलिपीवासी ऐसे ही हैं। इसलिए, फिलिपियों के विषय को एकता या खुशी या पीड़ा या जो कुछ भी के रूप में अलग करने का प्रयास, मुझे लगता है कि वे सभी कम पड़ जाते हैं, और वे सभी विषय हैं। और वे सभी वैध रूप से फिलिपियों में पाए जाते हैं, लेकिन ऐसा इसलिए है क्योंकि मुझे लगता है कि पॉल बस कई मुद्दों को संबोधित कर रहा है, और बस कई विषयों और विषयों को छूते हुए घूम रहा है जिन्हें वह फिलिपियन चर्च को संबोधित करना चाहता है।

ठीक है, मैंने कहा कि मैं फ़िलिपियन्स के माध्यम से तेज़ी से आगे बढ़ना चाहता हूँ, लेकिन एक पाठ है जिसे मैं धीमा करना चाहता हूँ और थोड़ा विस्तार से देखना चाहता हूँ, और यह फ़िलिपियंस के दूसरे अध्याय में पाया जाता है। वास्तव में, आम तौर पर, फिलिपियों में यही पाठ है, यही वह पाठ है जिस पर अधिकतर लोगों का ध्यान जाता है। यह अध्याय 2 के श्लोक 6 से

शुरू होता है, वास्तव में श्लोक 5 तक जाता है, जहां पॉल कहता है, वही मन तुम में रहो जो ईसा मसीह में भी था, जो यद्यपि ईश्वर के रूप में थे, उन्होंने ईश्वर के साथ समानता नहीं मानी। शोषण की जाने वाली चीज़ के रूप में।

लेकिन उसने खुद को खाली कर दिया, या मुझे वास्तव में पसंद है, मुझे लगता है कि एनआईवी यहां सबसे सटीक है, उसने खुद को कुछ भी नहीं बनाया, या उसने गुलाम का रूप लेकर, मानव समानता में पैदा होकर और पाए जाने पर खुद को बिना किसी प्रतिष्ठा के बना लिया। मानव रूप में, उसने स्वयं को दीन किया और यहां तक कि क्रूस पर मृत्यु तक भी आज्ञाकारी बना रहा। इसलिथे परमेश्वर ने भी उसे अति महान किया, और उसे अर्थात् यीशु को वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है, कि स्वर्ग में, और पृथ्वी पर, और पृथ्वी के नीचे सब घुटने यीशु के नाम पर झुकाएं। और परमपिता परमेश्वर की महिमा के लिये हर जीभ को अंगीकार करना चाहिए कि यीशु मसीह ही प्रभु है। अब दो तरीके हैं जिनसे हम इस तक पहुंच सकते हैं, और वैसे, यह खंड नए टेस्टामेंट के उन खंडों में से एक है जिसे ईसाई भजन का लेबल दिया गया है, दूसरा कुलुस्सियों में पाया जाता है जिसे हम बाद में निपटेंगे, उम्मीद है हम आज कुलुस्सियों से मिलेंगे, लेकिन कुलुस्सियों की पुस्तक में हमें एक और खंड मिलता है जिसे एक भजन, एक ईसाई भजन के रूप में जाना जाता है, और बहस का हिस्सा है, यदि आपके बाइबिल, यदि आपके पास बाइबिल है तो वह काव्यात्मक सेट करता है खंड या भजन खंड पद्य रूप में अलग, आपकी बाइबिल शायद फिलिप्पियों 2, 6 से 11 के साथ ऐसा करती है, ऐसा इसलिए है क्योंकि इस खंड को व्यापक रूप से एक भजन, या कम से कम किसी प्रकार की उत्कृष्ट गद्य या काव्य प्रकार की भाषा के रूप में माना जाता है, और इस पर बहस चल रही है कि क्या पॉल ने इसे लिखा था, या क्या पॉल केवल पहली शताब्दी के भजन या कविता का उपयोग और उद्धरण कर रहे हैं जिससे उनके पाठक परिचित हैं और अब वह इसका उपयोग कर रहे हैं, जैसे हम किसी को विस्तार से उद्धृत करते हैं और उसके चारों ओर उद्धरण चिह्न लगाते हैं, लेकिन मुझे यह निर्धारित करने में कोई दिलचस्पी नहीं है कि क्या पॉल ने इसे लिखा था या वह भजन उधार ले रहा है, चाहे जो भी मामला हो, हमें अभी भी इससे निपटना होगा कि यह अपने संदर्भ में क्या कर रहा है और क्या कहता है।

पहली बात यह है कि, इस भजन की संरचना पर ध्यान दें, इस भजन की संरचना वास्तव में यू-आकार लेती है, यह ईसा मसीह से शुरू होती है जिन्हें भगवान के रूप में संदर्भित किया जाता है, वास्तव में यह ईश्वर के साथ यीशु के पूर्व-अस्तित्व का संदर्भ है, लेकिन फिर भजन यू के निचले भाग में मंदी की शुरुआत करता है, जहां वह मानव रूप धारण करता है, उसे एक इंसान की समानता में बनाया गया है, लेकिन यह और भी आगे बढ़ता है, वह खुद को इस हद तक विनम्र कर लेता है कि मृत्यु और क्रूस पर मृत्यु हो जाती है, लेकिन फिर, तो आप यू-आकार के निचले भाग तक पहुंच गए हैं, लेकिन फिर भजन ऊपर की ओर मुड़ जाता है, ताकि अब अंतिम कुछ छंदों में, यीशु मसीह को बहुत ऊपर उठाया गया है, स्वर्गीय क्षेत्रों में, वह ऊंचा है और एक नाम दिया गया जो हर नाम से ऊपर है ताकि हर कोई यीशु के नाम पर झुके। तो, भजन इस तरह दिखता है, फिलिप्पियों के अध्याय 2 में तथाकथित मसीह भजन, यीशु मसीह, स्वर्गीय स्थिति, कहता है कि यद्यपि वह भगवान के रूप में था, उसने भगवान के साथ समानता को शोषण के लिए कुछ नहीं माना। अपने स्वयं के उपयोग के लिए, लेकिन उसने एक इंसान बनने और क्रूस पर मरने की हद तक खुद को अपमानित करने के बिंदु तक आत्मसमर्पण कर दिया, लेकिन यह

इसका अंत नहीं था, कथानक ऊपर की ओर यीशु के उत्थान की ओर मुड़ता है। वास्तव में, यदि यह सटीक होता, तो ऐसा ही होता।

एक तरह से यह इससे अधिक होना चाहिए। मुझे विश्वास है कि इस भजन में, यीशु न केवल उसी स्थिति में बहाल हो जाता है जो वह पहले था, बल्कि उसे कुछ ऐसा मिलता है जो उसके पास पहले नहीं था। अब, जिस व्यक्ति को अपमानित किया गया था, अब वह ऊंचा हो गया है और उसे एक ऐसा नाम प्राप्त हुआ है जिस पर हर घुटना झुकेगा और स्वीकार करेगा कि वह भगवान है।

तो, मुझे लगता है, यीशु के उत्कर्ष का परिणाम एक ऐसी स्थिति है जो पहले उसके पास भी नहीं थी। अब इस भजन के बारे में कुछ बातें। सबसे पहले, इसका क्राइस्टोलॉजी।

इस भजन में वह है जिसे बहुत उच्च क्राइस्टोलॉजी कहा जाता है, जो यीशु के स्वर्गीय पूर्व-अस्तित्व का एक स्पष्ट संदर्भ है, यह तथ्य कि वह भगवान के रूप में मौजूद है। लेकिन, मैं इस खंड में पुराने नियम के एक दिलचस्प उद्धरण की ओर भी आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। और यदि आपको, आपको वहां जाने की आवश्यकता नहीं है, तो मैं करूंगा, लेकिन यदि आपको पुराने नियम में यशायाह अध्याय 45, यशायाह अध्याय 45 और पद 23 पर वापस जाना है, तो मुझे लगता है कि मैं वही चाहता हूँ, यशायाह अध्याय 45 श्लोक 23.

अब, यह परमेश्वर यशायाह भविष्यवक्ता के माध्यम से इस्राएल से बात कर रहा है। तो, यह ईश्वर स्वयं की बात कर रहा है। मैं बैक अप लेने जा रहा हूँ और श्लोक 22 पढ़ूंगा।

वह कहता है, मेरी ओर फिरो, परमेश्वर इस्राएल से कहता है, मेरी ओर फिरो, और पृथ्वी के दूर दूर देशों के लोग उद्धार पाओ, क्योंकि मैं परमेश्वर हूँ, और कोई दूसरा नहीं। यह तो दिलचस्प है। ईश्वर अपनी पूर्ण विशिष्टता पर जोर दे रहा है कि उसके अलावा कोई अन्य ईश्वर नहीं है।

फिर वह कहता है, ये इस्राएल के लिये परमेश्वर के वचन हैं, मैं ने अपनी ही शपथ खाई है, मेरे मुंह से धर्म निकला है, एक वचन जो मेरे पास लौटकर न आएगा, हर घुटना झुकेगा और हर जीभ कबूल करेगी। दिलचस्प बात यह है कि यही वह पद है जो अब फिलिप्पियों के अध्याय 2 में यीशु पर लागू होता है। इसलिए हम देखते हैं, हम शुरुआत के प्रकार को नहीं देखते हैं, लेकिन हम एक ऐसी घटना को देखते हैं जो नए नियम में कई बार घटित होगी। अर्थात् पुराने नियम में ईश्वर का उल्लेख करने वाले ग्रंथ अब यीशु मसीह पर लागू होते हैं।

और इसके बारे में यशायाह अध्याय 45 में जो दिलचस्प बात है, वह ईश्वर की पूर्ण विशिष्टता के संदर्भ में है। वह कहता है, मैं भगवान हूँ और कोई नहीं है। तो यह पाठ यीशु मसीह पर कैसे लागू हो सकता है, पुराने नियम का एक पाठ जो ईश्वर की पूर्ण विशिष्टता की पुष्टि करता है, कि कोई अन्य ईश्वर नहीं है?

वह पाठ यीशु मसीह पर कैसे लागू हो सकता है यदि वह किसी अर्थ में स्वयं ईश्वर नहीं है? इसलिए मैं यह कहता हूँ, इस भजन या कविता में बहुत उच्च ईसाई धर्म है। यीशु परमेश्वर का ही रूप हैं। वह ईश्वर के रूप में पहले से विद्यमान है।

अंत में, वह ऊंचा हो गया है और एक पाठ जो अन्य सभी देवताओं के मुकाबले भगवान की विशिष्टता को लागू करता है या संदर्भित करता है वह अब यीशु मसीह पर लागू होता है जो सार्वभौमिक पूजा प्राप्त करेगा, सभी सृष्टि की सार्वभौमिक पूजा। अब, इस उच्च ईसाई धर्म और यीशु के प्रभुत्व और ईश्वर के रूप में उनकी पूर्ण विशिष्टता पर जोर देने के बावजूद, लेकिन जो खुद को विनम्र करता है और मानव रूप धारण करता है, उसका समर्थन करना और पूछना महत्वपूर्ण है, तो इस भजन का उद्देश्य क्या है? क्या पॉल हमें ईसाई धर्म का पाठ पढ़ा रहा है कि यीशु कौन है और उसका स्वभाव क्या है? खैर, इसमें निश्चित रूप से कुछ सच्चाई है, लेकिन यह जांचना महत्वपूर्ण है कि यह पाठ अपने संदर्भ में कैसे कार्य करता है। फिलिप्पियों 2 में सबसे महत्वपूर्ण पाठ छंद 6-11 नहीं है।

सबसे महत्वपूर्ण पाठ अध्याय 2 के छंद 1-4 हैं, जहां पॉल कहते हैं, यदि मसीह में कोई प्रोत्साहन है, प्रेम से कोई सांत्वना है, आत्मा में कोई साझेदारी है, कोई करुणा और सहानुभूति है, तो मेरा आनंद पूरा करें। यह पॉल फिलिप्पियों को समान विचार रखते हुए संबोधित कर रहा है। वह है सोचने की भाषा, एक ही मन का होना, पूरी सहमति और एक मन का होना, एक ही प्रेम रखना, स्वार्थी महत्वाकांक्षा या दंभ से कुछ नहीं करना, बल्कि विनम्रता से दूसरों को अपने से बेहतर मानना।

तुममें से प्रत्येक को अपना हित नहीं, बल्कि दूसरों का हित देखना चाहिए। और फिर हमारा पाठ आता है, अपने अंदर ऐसा मन रखो जो यीशु मसीह में भी है। तो मुख्य रूप से, यह भजन या कविता इस अति उत्कृष्ट ईसाई धर्म के साथ मुख्य रूप से उस तरह के व्यवहार के लिए एक मॉडल के रूप में कार्य कर रहा है जिसे पॉल अध्याय 2:1-4 में अपने पाठकों में देखना चाहता है।

यह स्वार्थी महत्वाकांक्षा की कमी का उदाहरण है। यह दूसरों के लिए उस तरह के त्यागपूर्ण प्रेम और चिंता का एक उदाहरण है जिसे पॉल अपने पाठकों में श्लोक 1-4 में देखना चाहता है। अब वह श्लोक 5-11 में स्वयं यीशु से इसका उदाहरण देता है।

इसलिए, यह समझना महत्वपूर्ण है कि यह पाठ केवल आपकी जिज्ञासा को संतुष्ट करने के लिए नहीं है कि यीशु कौन हैं, हालांकि यह महत्वपूर्ण है, इसका उद्देश्य इस आत्म-बलिदान प्रेम और स्वार्थ की कमी को जीने का एक नैतिक मॉडल है। महत्वाकांक्षा जिसे पॉल अध्याय 2:1-4 से अपने पाठकों में देखना चाहता है।

ठीक है, फ़िलिपियंस पर कोई प्रश्न? जैसा कि मैंने कहा, यही एकमात्र पाठ है जिसे मैं धीमा करके देखना चाहता हूँ। मुख्य बात जिस पर मैं चाहता हूँ कि आप ध्यान दें वह पत्र का समग्र उद्देश्य है।

पॉल ने इसे क्यों लिखा? वह क्या हासिल करने की कोशिश कर रहा है? तब उस प्रकार की काव्यात्मक एवं भजनात्मक संरचना छन्दबद्ध नहीं थी। हमारी कविता आज अक्सर ध्वनि में तुकबंदी करती है, या यहां तक कि हमारे भजन जो हम चर्च में गाते हैं या हमारे स्तुति गीत और कोरस, वे पंक्तियों के अंत में तुकबंदी करते हैं, एक दूसरे के साथ तुकबंदी करते हैं। जरूरी नहीं कि यहां ऐसा ही मामला हो।

ऐसे अन्य कारक हैं जो बताते हैं कि यह एक भजन या एक प्रकार का उत्कृष्ट गद्य लेखन है। यह एक अच्छा सवाल है। उम्मीद है, आप यह देखना शुरू कर सकते हैं कि नया नियम, धर्मशास्त्र के बारे में हमारी समझ और ईश्वर कौन है और यीशु कौन हैं, इत्यादि, उन लेखों से आते हैं जो बहुत विशिष्ट ऐतिहासिक परिस्थितियों में तैयार किए गए थे।

फिर से, पॉल वास्तविक समस्याओं के साथ वास्तविक चर्चों को संबोधित कर रहा है, और चाल यह समझने की है कि हम उन पत्रों से धर्मशास्त्र को कैसे समझते हैं जो बहुत ही विशिष्ट स्थितियों और परिस्थितियों को संबोधित थे। तो, आइए आरंभिक चर्च के मेल का एक और भाग खोलें। पुनः, नए नियम में विहित क्रम का अनुसरण करते हुए, कालानुक्रमिक क्रम का नहीं जिसमें वे लिखे गए थे, अगली पुस्तक जिसे हम देखना चाहते हैं वह कोलोसे शहर के लिए लिखी गई एक पुस्तक है, एक पुस्तक जिसे आप अपने नए नियम से जानते हैं कुलुस्सियों को पत्र।

यह दक्षिण-पश्चिमी एशिया माइनर या आधुनिक दक्षिण-पश्चिमी तुर्की का एक प्रकार का थोड़ा धुंधला नक्शा है। यहां इफिसस शहर है जिसके बारे में हमने थोड़ी बात की है, हालांकि फिर भी, मुझे नहीं लगता कि इफिसियों को पत्र इफिसस को लिखा गया था। यह संभवतः इनमें से बहुत सारे शहरों के लिए लिखा गया था, लेकिन आप देखेंगे कि इफिसस से अंतर्देशीय, अंतर्देशीय रास्ते, कुलुस्से का शहर है।

और कोलोसे, वास्तव में कुछ अन्य तस्वीरें, यह बताती हैं, शहर का टीला। यह प्राचीन काल की एक आधुनिक तस्वीर है, जहां प्राचीन शहर कोलोसे रहा होगा। यह एम्फीथिएटर है, कोलोसे शहर के एम्फीथिएटर में जो बचा है, वह स्पष्ट रूप से कोलोसे के आधुनिक चित्रण से है।

हम कुलुस्से शहर के बारे में क्या जानते हैं? कुछ दिलचस्प बातें, सबसे पहले, कुलुस्से शहर सबसे छोटे और शायद सबसे कम महत्वपूर्ण शहरों में से एक था, जिसे पॉल ने पत्र लिखा था। इफिसस या रोम जैसे शहरों के विपरीत, जिन्होंने राजनीतिक और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, या कोरिंथ, कोलोसे एक महत्वहीन शहर प्रतीत हुआ। ऐसा प्रतीत होता है कि यह भी लगभग 60 ई.पू. के मध्य में किसी भूकंप से नष्ट हो गया था।

तो, एक बहुत ही महत्वहीन शहर। हालांकि, पत्र के बारे में दूसरी बात जो हम जानते हैं वह यह है कि पॉल ने स्पष्ट रूप से शहर का दौरा नहीं किया था। यह उन कुछ शहरों में से एक है जिसके लिए पॉल ने एक पत्र लिखा है कि उसने खुद चर्च नहीं बनाया था, या उसमें कोई भूमिका नहीं निभाई थी, या व्यक्तिगत रूप से वहां नहीं गया था।

और कुलुस्सियों में कई छंद बिखरे हुए हैं जो आपको यह आभास देते हैं। उदाहरण के लिए, मुझे लगता है कि अध्याय 2 और श्लोक 1 में, वह कहते हैं, यहाँ पॉल कुलुस्सियों के अध्याय 2 और पद 1 में क्या कहता है, क्योंकि मैं चाहता हूँ कि आप जानें कि मैं आपके लिए, और लौदीकिया में रहने वालों के लिए, और उनके लिए कितना संघर्ष कर रहा हूँ। वे सभी जिन्होंने मुझे आमने सामने नहीं देखा है। इसलिए, वह कुलुस्सियन ईसाइयों को वर्गीकृत करता प्रतीत होता है जिन्हें वह उन लोगों के समूह के हिस्से के रूप में लिख रहा है जिन्हें उसने कभी आमने-सामने नहीं देखा है।

इसके बजाय, किसी और ने कुलुस्से में चर्च की स्थापना की है, लेकिन अब कुछ ऐसा हुआ है कि पॉल को यह आवश्यक लगता है कि वह इस शहर के चर्च को एक पत्र लिखे। आपके नोट्स के अगले भाग में, कुलुस्सियों के साथ एक बात जो बहुत दिलचस्प है, वह यह है कि कई स्थानों पर यह इफिसियों के साथ निकटता से ओवरलैप होता है, इस हद तक कि शब्दावली और समानता उसी प्रकार की समानता है जो आप सिनोट्टिक समस्या में पाते हैं। याद रखें जब हमने मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के बारे में बात की थी, और हमने कहा था कि शब्दांकन, न केवल घटनाओं और अवधारणाओं का क्रम, बल्कि शब्दांकन इतना समान था कि मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के बीच कुछ संबंध रहा होगा।

और हमने सुझाव दिया कि मार्क संभवतः पहले लिखा गया था, और फिर मैथ्यू और ल्यूक ने मार्क का उपयोग किया, लेकिन कुछ अन्य स्रोतों का भी। उसी प्रकार की समानता इन अनुच्छेदों के बीच स्पष्ट है जिन्हें मैंने आपके पाठ्यक्रम में इफिसियों और कुलुस्सियों के बीच सूचीबद्ध किया है। मैं उन्हें पढ़ने के लिए समय नहीं लेने जा रहा हूँ, लेकिन यदि आपके पास कुछ समय है, यहां तक कि अंग्रेजी अनुवाद में भी, तो बस उनकी तुलना करें, आप उपयोग किए गए सटीक शब्दों की समानता को नोट करने से खुद को रोक नहीं पाएंगे।

तो हम इसे कैसे समझाएँ? शायद, सबसे अधिक संभावना है, एक संभावित परिदृश्य यह है कि पॉल ने सबसे पहले एक बहुत ही विशिष्ट स्थिति या समस्या को संबोधित करने के लिए कुलुस्सियों को लिखा होगा, और हम बस एक पल में देखेंगे कि वह समस्या क्या है। और फिर, मूल रूप से, पॉल ने सोचा कि उसने जो लिखा है वह बहुत व्यापक दर्शकों के लिए फायदेमंद होगा। इसलिए, वह लिखते हैं और कुलुस्सियों की अधिकांश जानकारी को शामिल करते हैं, जिसे वह अब बहुत व्यापक पाठक वर्ग को संबोधित करते हैं, किसी विशिष्ट समस्या के जवाब में नहीं।

तो यह संभवतः समानताओं का कारण है। कुछ लोगों का सुझाव है कि पॉल ने इनमें से एक भी पत्र नहीं लिखा। शायद उन्होंने कुलुस्सियों को लिखा, और कुछ बाद के लेखकों ने इफिसियों को बनाने के लिए कुलुस्सियों के कुछ हिस्सों की नकल की।

लेकिन मुझे लगता है कि इसकी अधिक संभावना है कि पॉल ने एक ही सामग्री का दो बार उपयोग किया हो। एक बार कुलुस्सियों में एक बहुत ही विशिष्ट स्थिति को संबोधित करने के लिए, जिसे हम देखेंगे कि वह क्या है, और फिर एक और अधिक सामान्य स्थिति और सामान्य दर्शकों को संबोधित करने के लिए। अब सवाल यह है कि पॉल किस समस्या का समाधान कर रहे होंगे? या इसे दूसरे तरीके से कहें तो, क्या कुलुस्से शहर में किसी प्रकार की झूठी शिक्षा या किसी प्रकार की समस्या थी जिसके कारण पॉल को लिखना पड़ा? इस पर बहस हुई है क्योंकि पॉल बाहर आकर वास्तव में यह नहीं कहते हैं।

जब आप गलातियों को पढ़ते हैं, तो याद रखें कि हमने गलातियों के बारे में बात की थी। यदि आप वापस जाएं और उस पुस्तक को पढ़ें, तो यह बहुत स्पष्ट और स्पष्ट है कि पॉल किसी प्रकार की झूठी शिक्षा या समस्या को संबोधित कर रहा है। हालाँकि, जब आप कुलुस्सियों को पढ़ते हैं, तो यह उतनी दृढ़ता से सामने नहीं आता है।

वास्तव में, आपके पास एकमात्र सबूत है कि पॉल किसी प्रकार की समस्या या झूठी शिक्षा को संबोधित कर रहा है, अध्याय 2, पत्र के लगभग एक तिहाई तक नहीं आता है। जबकि गलातियों में, पौलुस सीधे समस्या में कूद पड़ा, उसने कहा, मुझे आश्चर्य है कि तुम इतनी जल्दी सुसमाचार से फिर गए। लेकिन कुलुस्सियों में, आपको तब तक कोई संकेत नहीं मिलता है कि कुलुस्से के चर्च में कुछ भी गलत है, जब तक कि आप पुस्तक का लगभग एक तिहाई हिस्सा नहीं समझ लेते, जब तक कि आप अध्याय 2 में अच्छी तरह से नहीं पहुंच जाते। तो, इस वजह से, कुछ ने कहा है, ठीक है, ऐसा प्रतीत नहीं होता कि पॉल किसी स्थिति या किसी विशिष्ट समस्या या किसी प्रकार की झूठी शिक्षा को संबोधित कर रहा है जिसने चर्च में घुसपैठ की है जैसा कि वह गलाटिया में था।

तो, कुछ ने कहा है, नहीं, वह नहीं है। लेकिन दूसरे, दूसरे लोग इस तरह की आयतों के कारण आश्चर्य होते हैं। यह अध्याय 2 और श्लोक 4 है। मुझे यकीन नहीं है कि मेरे पास वहां दो श्लोक 4 क्यों हैं, लेकिन अध्याय 2 में, दूसरा श्लोक 8 होना चाहिए। लेकिन अध्याय 2 और श्लोक 4 में, वह कहते हैं, मैं कोशिश कर रहा हूँ, और फिर, यह पहला संकेत है जो आपको मिलता है कि कोई समस्या है।

पौलुस अंततः पूरे अध्याय के बाद कहता है, और फिर अध्याय 2 के श्लोक 4 में, मैं ये बातें इसलिए कह रहा हूँ ताकि कोई तुम्हें अच्छे-अच्छे तर्कों से धोखा न दे सके। और वह बस इतना ही कहता है। और फिर श्लोक 8, श्लोक 8 में कुछ श्लोकों को छोड़ते हुए, वे कहते हैं, इस बात का ध्यान रखें कि कोई तुम्हें मानव परंपराओं के अनुसार, ब्रह्मांड की मौलिक आत्माओं के अनुसार दर्शनशास्त्र और खोखले धोखे के माध्यम से बंदी न बनाए, न कि मसीह के अनुसार। .

हमें दूसरा संकेत मिलता है कि कुछ गड़बड़ हो सकती है। लेकिन मुझे लगता है कि यह और भी स्पष्ट हो जाता है जब हम अध्याय 2 के श्लोक 16 पर आगे बढ़ते हैं। पॉल कहते हैं, इसलिए, किसी को भी खाने-पीने या त्योहारों और अमावस्या या सब्बाथ मनाने के मामले में अपनी निंदा न करने दें। ये जो आने वाला है उसकी छाया भर दें, लेकिन सार मसीह का है।

कोई तुम्हें अयोग्य न ठहराए, जो नम्रता और स्वर्गदूतों की पूजा पर जोर देता है, दर्शन पर ध्यान केंद्रित करता है, मानवीय सोच से अकारण फूलता है और सिर पर दृढ़ता से विश्वास नहीं करता है, जो यीशु मसीह है। फिर मैं श्लोक 20 पर जाऊंगा। यदि मसीह के साथ आप ब्रह्मांड की मौलिक आत्माओं के लिए मर गए, तो आप अभी भी ऐसे क्यों रहते हैं जैसे कि आप दुनिया से संबंधित हैं? आप नियमों का पालन क्यों करते हैं? न संभालें, न चखें, न छुएं।

इसलिए, उन छंदों के कारण, आज अधिकांश लोग आश्चर्य हैं कि हाँ, पॉल किसी प्रकार की पथभ्रष्ट शिक्षा को संबोधित कर रहा था। किसी प्रकार की शिक्षा है जो कोलोसियन चर्च में घुसपैठ कर चुकी है या शायद घुसपैठ करना शुरू कर रही है, जिससे पॉल चिंतित था, और इसीलिए वह बैठता है और इसे खत्म करने की कोशिश करने के लिए या इस शिक्षा का मुकाबला करने के लिए यह पत्र लिखता है कि वह कुछ से डरता है हो सकता है कि कुलुस्सियों को यह सोचकर धोखा दिया गया हो कि यह सही है, या हो सकता है कि कुछ लोग इसका हिस्सा बनने या अनुसरण करने पर विचार कर रहे हों। अब समस्या है, तो मुझे लगता है कि एक मध्यस्थता की

स्थिति मुझे लगता है कि हां, पॉल किसी प्रकार की झूठी शिक्षा को संबोधित कर रहा है, लेकिन स्थिति उतनी गंभीर या उतनी गंभीर नहीं दिखती जितनी गलाटियन में थी।

या फिर, गलातियों के पास वापस जाएँ जहाँ पहले पद से ही वह धन्यवाद ज्ञापन को छोड़ देता है और कहता है, मुझे आश्चर्य है कि तुम इतनी जल्दी सुसमाचार से विमुख हो गए। लेकिन अब वह अध्याय दो तक कुछ नहीं कहते। तो शायद हमें इससे यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि हाँ, एक झूठी शिक्षा है, लेकिन शायद यह उतनी गंभीर नहीं है, या शायद इसने अभी तक चर्च में घुसपैठ नहीं की है और वास्तव में लोगों को भटकाना शुरू नहीं किया है।

लेकिन क्या हम और अधिक विशिष्ट हो सकते हैं? यह कौन सी शिक्षा है जिसका पॉल मुकाबला कर रहा है? जैसा मैंने कहा, जब हमने गलातियों को देखा, तो लगभग हर कोई इस बात से सहमत था कि पॉल यहूदीवादियों को संबोधित कर रहा है, यानी यहूदी ईसाई जो अन्यजातियों को मूसा के कानून के अधीन होने के लिए मजबूर करने की कोशिश कर रहे हैं। यीशु मसीह में विश्वास ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि ईश्वर के लोग बनने के लिए किसी को मोज़ेक कानून के प्रति समर्पण करना होगा और एक यहूदी के रूप में जीवन जीना होगा। यह बिल्कुल स्पष्ट है, लेकिन कुलुस्सियन थोड़ा अलग है।

वास्तव में, क्या हो रहा है इसके बारे में कई प्रस्ताव और स्पष्टीकरण आए हैं। यह कौन सी शिक्षा है जो पौलुस को चिंतित और चिंतित करती प्रतीत होती है, कि उसे कुलुस्सियों को धोखा न देने या गुमराह न होने की चेतावनी देनी चाहिए? और समस्या यह है कि साक्ष्य कई तरीकों से जाते प्रतीत होते हैं। उदाहरण के लिए, यदि मैं अध्याय 2 और श्लोक 8 पढ़ता हूँ, तो इस बात का ध्यान रखें कि कोई तुम्हें मानव परंपरा के अनुसार दर्शनशास्त्र और खोखले धोखे के माध्यम से बंदी न बना ले।

तो, यह शिक्षा जो भी थी, पॉल ने इसे एक दर्शन का नाम दिया, और साथ ही, उसने इसे मानव परंपरा से अधिक किसी चीज़ पर आधारित नहीं देखा और यह कुछ ऐसा था जो कुलुस्सियों को धोखे से भटका सकता था। तो, हम पूछ सकते हैं कि मानव विवरण या मानव परंपराओं पर आधारित दर्शन के उस विवरण के अंतर्गत क्या आ सकता है? खैर, आइए उस अगले भाग में श्लोक 16 से शुरू करते हुए थोड़ा और पढ़ें। वह कहते हैं, इसलिए, खाने-पीने या नए चाँद या सब्त के दिन मनाने के मामले में किसी को अपनी निंदा न करने दें।

इससे इस शिक्षण की प्रकृति के बारे में क्या पता चलता है? नये चाँद, त्यौहार और सब्त का दिन कौन मनाएगा? यहूदी। वास्तव में, वह तीन गुना वाक्यांश, अमावस्या, त्यौहार और सब्बाथ, पुराने नियम में पाया जाता है। दिलचस्प बात यह है कि यह कुमरान साहित्य, मृत सागर स्क्रॉल में भी पाया जाता है।

इसलिए, मुझे विश्वास है कि यह झूठी शिक्षा जो भी हो, यह एक प्रकार का यहूदी धर्म है जिसे पॉल, फिर से यहूदीवादियों के साथ व्यवहार कर रहा है, जिन्हें वह अब अपने पाठकों को भटकाने के खतरे में देखता है। वास्तव में, यह बहुत आम बात हुआ करती थी, खैर, मुझे आगे पढ़ने दीजिए।

यहाँ इसके बारे में क्या? किसी को भी विनम्रता और स्वर्गदूतों की पूजा पर जोर देकर, मानवीय सोच से अकारण फूले हुए दर्शन पर ध्यान केंद्रित करने से अयोग्य न ठहराएं।

अब, चाहे वह कोई भी हो, स्वर्गदूतों की पूजा करता है या किसी तरह से स्वर्गदूतों की पूजा करने या स्वर्गदूतों के साथ पूजा करने में शामिल होता है। और फिर वह आगे बढ़ता है और कहता है, आप इसके नियमों का पालन क्यों करते हैं, संभालते नहीं हैं, चखते नहीं हैं, छूते नहीं हैं, जो शारीरिक सुख से बचने या कुछ चीजों के साथ शारीरिक संपर्क से बचने की एक तरह की अत्यधिक तपस्या की तरह लगता है। अब, कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि आप यहां जो कर रहे हैं वह वास्तव में कई धार्मिक दर्शन और मान्यताओं का मिश्रण है।

तो, हो सकता है कि आपके पास थोड़ा सा यहूदी धर्म हो, और आपके पास थोड़ा सा ज्ञानवाद भी हो। हमने इन सभी चीजों के बारे में बात की है। आपके पास शायद कुछ अन्य बुतपरस्त धर्मों के बारे में भी होगा, कुछ चीजें जिनके बारे में हमने सेमेस्टर की शुरुआत में बात की थी।

तो, कुछ लोगों ने कहा है कि यह यहूदी मान्यताओं और अन्य बुतपरस्त मान्यताओं का एक प्रकार का समन्वय है। समस्या यह है कि वास्तव में इसका कोई सबूत नहीं है कि ऐसा हुआ होगा, कि यहूदी धर्म उस हद तक समन्वयित हो गया होगा जैसा कि कुछ लोग कुलुस्सियों के पीछे की झूठी शिक्षा के साथ सुझा रहे हैं। अधिकांश यहूदी धर्मों के बारे में हम जो जानते हैं, उससे पता चलता है कि यद्यपि वे हेलेनिज़्म और यूनानी विचारधारा से प्रभावित थे, फिर भी वे ईश्वर के लोगों के रूप में अपनी पवित्रता बनाए रखने के लिए चिंतित रहे होंगे।

इसलिए, मुझे विश्वास है कि कुलुस्सियों के पीछे के झूठे शिक्षकों को यहूदी धर्म से बाहर देखने की कोई आवश्यकता नहीं है। और दो संभावनाएँ हैं. नंबर एक, हमारे पास वास्तव में कई पाठ हैं जिन्हें हम सर्वनाश कहते हैं।

अर्थात्, ये ऐसे ग्रंथ हैं जो प्रकाशितवाक्य और डैनियल की पुस्तक से मिलते जुलते हैं। यह किसी के दूरदर्शी अनुभव का विवरण है जहां वे स्वर्ग में चढ़ते हैं, और वे स्वर्गीय लोकों को देखते हैं, जिसमें देवदूत प्राणी शामिल हैं, और कुछ सर्वनाशों में, स्वर्गदूतों की पूजा करते हुए, यहां तक कि पूजा में स्वर्गदूतों के शामिल होने के दर्शन भी शामिल हैं।

और कुछ ऐसे स्थानों का भी सुझाव देते हैं जहां स्वर्गदूतों को स्वयं पूजा में प्रसन्न होना चाहिए। तो, यह रहस्यमय, दूरदर्शी प्रकार का अनुभव यहूदी धर्म में एक सामान्य घटना थी। फिर से, आप इन सभी सर्वनाशों को पढ़ सकते हैं।

हमारे पास अंग्रेजी अनुवाद हैं। वे इसे पुराने और नए टेस्टामेंट में शामिल नहीं कर पाए, लेकिन वे अभी भी इस बात की गवाही देते हैं कि पहली शताब्दी में कई यहूदियों ने क्या सोचा था। लेकिन दूसरा, मैं इस बात से भी आश्चर्य हूँ कि एक और संभावना भोजन और पेय का संदर्भ है।

वह कहते हैं, खाने-पीने के मामले में किसी को भी आपको जज करने न दें। नए चंद्रमाओं, त्योहारों और सब्बाथों का संदर्भ, स्वर्गदूतों की पूजा और दर्शन, शरीर के प्रति कठोर व्यवहार, विनम्रता और यहां तक कि शेखी बघारना, शेखी बघारना और किसी ने जो देखा, उसका संदर्भ।

दिलचस्प बात यह है कि ये सभी तत्व एस्सेन्स या कुमरान समुदाय में पाए जा सकते हैं, विशेष रूप से मृत सागर स्कॉल में इसकी गवाही दी गई है।

इसलिए, मुझे आश्चर्य है कि पॉल जिस यहूदी धर्म का मुकाबला कर रहा है, वह या तो यह सर्वनाशकारी प्रकार का यहूदी धर्म नहीं है जो रहस्यमय दृष्टि और दूरदर्शी अनुभव पर जोर देता है, या क्या यह एस्सेन्स और मृत सागर समुदाय की तरह यहूदी धर्म हो सकता है जो सब्बाथ के सख्त पालन को महत्व देता है। उन्होंने औपचारिक पवित्रता का पालन किया और कुछ चीजों के संपर्क से परहेज किया। ऐसे संदर्भ भी हैं, कुमरान समुदाय में कुछ दस्तावेज़ भी हैं जो वास्तव में स्वर्गदूतों के साथ पूजा करने, स्वर्गीय क्षेत्रों में स्वर्गदूतों के साथ पूजा करने के इस रहस्यमय अनुभव की गवाही देते हैं।

इसलिए, मेरी राय में, मुझे लगता है कि पॉल कुछ समन्वयवाद या यहूदी और बुतपरस्त मान्यताओं के कुछ समामेलन को संबोधित नहीं कर रहा है, जो सभी एक में मिश्रित हैं, लेकिन मुझे लगता है कि वह सिर्फ उस समय के यहूदी धर्म को संबोधित कर रहा है, और वह या तो एक सर्वनाशकारी प्रकार है या एक एसेन है या कुमरान प्रकार का यहूदी धर्म। समस्या यह है कि यह यहूदी धर्म अब, जाहिरा तौर पर, उसके कुछ पाठकों के लिए आकर्षक हो गया है, और अब पॉल को उन्हें इस शिक्षण के आगे झुकने या इस रहस्यमय प्रकार के यहूदी धर्म, इस सर्वनाशकारी प्रकार या एसेन या कुमरान के साथ जाने के खतरे के बारे में चेतावनी देनी चाहिए। यहूदी धर्म का प्रकार. तो, संक्षेप में कहें तो, कुलुस्सियों का उद्देश्य यह है कि पॉल ने अपने पाठकों को चेतावनी देने के लिए कुलुस्सियों को लिखा कि वे इस झूठी शिक्षा, इस यहूदी धर्म से गुमराह न हों, जो उनके जीवन का एक विकल्प प्रदान करता है जो उनके पास मसीह यीशु में है।

इसलिए, पॉल कुलुस्सियों को चेतावनी देने के लिए लिखने जा रहा है कि वे मसीह यीशु में जो कुछ भी है उसके विकल्प के रूप में इस यहूदीवादी शिक्षा को न दें। और वह जो करने जा रहा है वह इस बात पर जोर देना है कि उनके पास मसीह यीशु में वह सब कुछ है जो उन्हें चाहिए और उन्हें यह नहीं चाहिए कि यह रहस्यमय या कुमरान प्रकार का यहूदी धर्म उन्हें क्या प्रदान करता है। उनकी तपस्या, स्वर्गदूतों की पूजा और दूरदर्शी अनुभव के साथ, उन्हें मसीह में जो कुछ है उसके विकल्प के रूप में इसकी आवश्यकता नहीं है क्योंकि उनके पास पहले से ही वह सब कुछ है जो उन्हें मसीह यीशु में चाहिए।

ठीक है, पुस्तक की पृष्ठभूमि या पॉल क्या कर रहा है, वह क्यों लिख रहा है, के बारे में अब तक कोई प्रश्न है? अच्छा। और मैं वास्तव में इसे लिखित रूप में और अधिक विकसित करने की आशा करता हूँ क्योंकि यह वास्तव में कभी प्रस्तावित नहीं किया गया है। अधिकांश लोग अभी भी आश्चर्य हैं कि जब आप कुलुस्सियों को पढ़ते हैं, तो यह एक तरह से यहूदी धर्म और अन्य बुतपरस्त धार्मिक विचारों जैसे कि ज्ञानवाद और अन्य बुतपरस्त धार्मिक मान्यताओं का एक मिश्रण है।

लेकिन फिर भी, मैं आश्चर्य नहीं हूँ कि यह मामला है, और मुझे नहीं लगता कि हमें उस शिक्षण में सभी तत्वों को खोजने के लिए यहूदी धर्म से परे देखने की ज़रूरत है जिसे पॉल कुलुस्सियों में

संबोधित करता है। इसलिए, मुझे आशा है कि किसी बिंदु पर इसे और अधिक विकसित किया जा सकेगा। तो, मैं इसका एक तरह से परीक्षण कर रहा हूँ।

इसलिए किसी दिन अगर यह गलत साबित होता है, तो मैं माफी मांगता हूँ, लेकिन मुझे नहीं लगता कि ऐसा है। ठीक है, कुलुस्सियों का विषय क्या है? यदि मैं एक मुख्य विषय प्रदान करूँ, और शायद मुख्य विषय नहीं, बल्कि एक मुख्य विषय, तो वह मसीह की सर्वोच्चता होगी। वास्तव में, पॉल अपने पूरे पत्र में यही तर्क देता है, कि मसीह की सर्वोच्चता और पूर्ण पर्याप्तता के कारण, उन्हें इस रहस्यमय प्रकार के यहूदी धर्म और उसके अनुभवों की आवश्यकता नहीं है।

वास्तव में, जैसा कि हम देखने जा रहे हैं, इस झूठी शिक्षा, इस यहूदी धर्म, के साथ पॉल की मुख्य समस्या न केवल धार्मिक है, बल्कि नैतिक भी है। उनकी समस्या यह है कि यह यहूदी धर्म और इसकी सभी तपस्वी प्रथाएँ और रहस्यमय अनुभव पाप की शक्ति को हराने के लिए कुछ नहीं करते हैं। लेकिन मसीह में, उनके पास पाप और उसकी शक्ति पर विजय पाने की क्षमता है।

मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान में उनके साथ शामिल होने के कारण, उनके पास पाप की शक्ति पर विजय पाने के लिए आवश्यक सब कुछ है। तो वे इस यहूदी धर्म को क्यों खरीदना चाहेंगे जिनकी तपस्या और रहस्यमय अनुभव पाप पर काबू पाने और शरीर की इच्छाओं पर काबू पाने के लिए कुछ नहीं करते? इसलिए, सभी चीज़ों पर मसीह की श्रेष्ठता या सर्वोच्चता पॉल में एक प्रमुख विषय है। और पॉल ने उस विषय को अपने पत्र में बहुत पहले से ही विकसित किया है, अध्याय 1 में। यहाँ तथाकथित मसीह भजनों में से दूसरा है।

हमने फिलिप्पियों 2 और श्लोक 6 से 11 में पहले ही एक को देख लिया है। यहाँ दूसरा है, कुलुस्सियों अध्याय 1, श्लोक 15 से 20 तक। और फिर, कुछ लोग पूछते हैं, अच्छा, क्या पॉल ने इसे लिखा है? या क्या वह पहले से मौजूद भजन उधार ले रहा है? क्या वह किसी भजन या कविता का उपयोग कर रहा है जिसे प्रारंभिक चर्च जानता था और उपयोग करता था, और अब पॉल इसका उपयोग कर रहा है क्योंकि यह वही कहता है जो वह कहना चाहता है? या पॉल ने यह लिखा? फिर, मुझे उस प्रश्न को सुलझाने में कोई दिलचस्पी नहीं है।

लेकिन फिर, यह पूछना अधिक महत्वपूर्ण है कि यह भजन कैसे कार्य करता है? पद 15 से प्रारंभ करते हुए, वह अदृश्य ईश्वर की छवि है, जो समस्त सृष्टि का पहलौठा है। क्योंकि उसी में स्वर्ग और पृथ्वी की सारी वस्तुएं सृजी गईं, दृश्य और अदृश्य वस्तुएं, चाहे सिंहासन हों, प्रभुत्व हों, शासक हों या शक्तियां हों, सभी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं। वह आप ही सब वस्तुओं से पहले है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं।

वह अपने शरीर, चर्च का मुखिया है। वह आदि है, मृतकों में से पहलौठा है, ताकि उसे हर चीज़ में प्रधानता या पहला स्थान मिले। क्योंकि उसमें परमेश्वर की सारी परिपूर्णता वास करने को प्रसन्न थी, और उसके द्वारा, परमेश्वर अपने क्रूस के लहू के द्वारा शांति स्थापित करके, चाहे पृथ्वी पर हो या स्वर्ग में, सभी चीज़ों को अपने साथ मिलाने में प्रसन्न था।

अब, मुझे लगता है कि इस भजन को पत्र में इतनी जल्दी डालने का एक कारण यह था कि यदि वह उन्हें इसमें खरीदने के लिए प्रेरित कर सकता है, और इस ईसाई भजन में ईसा मसीह के इस उत्कृष्ट चित्रण को देखने के बाद, उम्मीद है, वे और अधिक इच्छुक होंगे इस झूठी शिक्षा से बचने के लिए उनकी चेतावनियों को स्वीकार करना। उम्मीद है, वे उससे सहमत होंगे कि इस झूठी शिक्षा, इस रहस्यमय यहूदी धर्म के पास वास्तव में उन्हें देने के लिए कुछ भी नहीं है। यदि वे इस भजन और इस कविता को सुनते हैं, तो वे उम्मीद से समझेंगे कि उनके पास मसीह में वह सब कुछ है जो उन्हें चाहिए, और उन्हें इस रहस्यमय यहूदी धर्म की तपस्या और उसके दूरदर्शी और रहस्यमय प्रकार के अनुभवों की आवश्यकता नहीं है। अब, इस भजन के बारे में बस कुछ बातें कहनी हैं। सबसे पहले, ध्यान दें कि भजन को कैसे विभाजित किया गया है।

सबसे पहले, श्लोक 15 से 17 में, यीशु को पहली सृष्टि के प्रभु के रूप में चित्रित किया गया है। तो, उत्पत्ति अध्याय 1 और 2 की ओर इशारा करते हुए, अब यीशु को ब्रह्मांड के निर्माण के प्राथमिक एजेंट के रूप में देखा जाता है। इसलिए, पॉल ने यीशु को पहली सृष्टि, संपूर्ण ब्रह्मांड पर प्रभु के रूप में चित्रित किया।

वह स्वर्ग और पृथ्वी पर प्रभु है, और स्वर्ग और पृथ्वी में हर चीज का अस्तित्व यीशु मसीह के कारण है। हालाँकि, पॉल इस तथ्य पर भी आश्चर्य है कि यीशु सृष्टि पर प्रभु है, इसका मतलब है कि वह सृष्टि को उसके वास्तविक लक्ष्य तक लाने में सक्षम है। अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से, यीशु ने अब एक नई सृष्टि की स्थापना की है।

और धारणा यह है कि, इफिसियों के साथ भी यही धारणा है, धारणा यह है कि पाप ने अव्यवस्था पैदा की है, पाप ने एक तरह से पहली रचना को बर्बाद कर दिया है, इसलिए अब ईश्वर को सृष्टि को एक नई रचना के लक्ष्य तक लाने के लिए एक नया रचनात्मक कार्य स्थापित करना होगा। और अब पॉल आश्चर्य है कि यह यीशु मसीह के माध्यम से हुआ है। इसलिए, वह न केवल पहली सृष्टि का, बल्कि नई सृष्टि का भी प्रभु है।

पहली सृष्टि के प्रभु के रूप में, वह सृष्टि को उसके इच्छित लक्ष्य तक लाने में सक्षम है, जो पहले से ही एक नए सृजित कार्य के रूप में है, और यही विचार वह इफिसियों के साथ साझा करता है, इफिसियों की पुस्तक, यह पहले से ही इसके माध्यम से प्रदर्शित किया गया है गिरजाघर। चर्च नई सृष्टि की पहली किस्त है, जहाँ ईश्वर सभी चीजों को अपने साथ समेटना शुरू कर रहा है। दरअसल, यीशु का पुनरुत्थान, उसे मृतकों में से पहलौठा कहा गया है।

यीशु का पुनरुत्थान नई सृष्टि का उद्घाटन है। लेकिन एक सुलझी हुई मानवता के रूप में चर्च का निर्माण भी इस नए रचनात्मक कार्य का हिस्सा है जिसका उद्घाटन अब यीशु मसीह ने किया है। हालाँकि, कुछ अन्य बातें।

यीशु को अदृश्य ईश्वर की छवि और समस्त सृष्टि के पहलौठे के रूप में चित्रित किया गया है। दिलचस्प बात यह है कि ये पुराने नियम और यहूदी साहित्य में ऐसे शब्द हैं जिन्हें ज्ञान पर लागू किया गया था। बुद्धि को ईश्वर की छवि के रूप में देखा जाता था।

बुद्धि को ईश्वर के साथ-साथ विद्यमान देखा गया। बुद्धि को सृजन के एजेंट के रूप में देखा गया। लेकिन अब, पॉल, हालांकि पहली शताब्दी में और उससे पहले और बाद में अधिकांश यहूदियों ने टोरा के साथ ज्ञान की पहचान की होगी, पॉल कहते हैं, कानून, कि यीशु मसीह भगवान के ज्ञान का सच्चा अवतार है।

इसलिए, पॉल ज्ञान, ईश्वर की छवि, निर्माता, वह चीज़ जिसके माध्यम से सभी चीज़ें बनाई जाती हैं, और सभी सृष्टि के पहलौठे की श्रेणियों का उपयोग करता है। उस भाषा का अधिकांश भाग यह दर्शाता है कि पुराने नियम और अन्य यहूदी साहित्य ने ज्ञान को कैसे चित्रित किया है। इसलिए, यीशु को परमेश्वर के ज्ञान, परमेश्वर के सच्चे प्रकटकर्ता के रूप में चित्रित किया गया है।

हालाँकि, यह वाक्यांश भी दिलचस्प है, सारी सृष्टि का पहलौठा। हो सकता है कि हम इसे गलत तरीके से पढ़ें। लेकिन यह वाक्यांश वास्तव में भजन 89 से आता है, जो मसीहा, डेविडिक राजा के बारे में एक भजन है।

और वहाँ, पहलौठा स्पष्ट रूप से सृष्टि पर संप्रभुता और अधिकार को संदर्भित करता है। इसलिए यीशु को सृष्टि का पहलौठा कहने का इस तथ्य से कोई लेना-देना नहीं है कि यीशु की रचना की गई थी या एक समय था जब उनका अस्तित्व नहीं था और अब वह अस्तित्व में आए हैं। फर्स्टबॉर्न का वास्तविक जन्म या उत्पादन से कोई लेना-देना नहीं है।

इसका संबंध स्थिति या संप्रभुता से है। तो, भजन 89 में, राजा पहलौठा है क्योंकि वह सारी सृष्टि पर संप्रभु शासक है। इसलिए, यीशु को सृष्टि का पहलौठा कहकर, यह भजन 89 की पूर्ति में डेविडिक राजा के रूप में राजा के रूप में पूरी सृष्टि पर उनके अधिकार और संप्रभुता का एक शब्द है।

तो फिर, लेखक ने यीशु को सारी सृष्टि, पहली रचना और दूसरी रचना, नई रचना पर संप्रभु शासक के रूप में चित्रित करने के लिए ज्ञान साहित्य और पुराने नियम से इन सभी वाक्यांशों को ढेर कर दिया है, ताकि निष्कर्ष यह हो कि, और क्या करें पाठकों को चाहिए? वे संभवतः इस रहस्यमय प्रकार के यहूदी धर्म, इस कुमरान या एसेन प्रकार या सर्वनाशकारी प्रकार के यहूदी धर्म में क्या पा सकते हैं? वे संभवतः उसमें क्या पा सकते हैं जो मसीह में उनके पास जो कुछ है उसका पूरक या विकल्प प्रदान कर सकता है? तो, पत्र के शेष भाग में, मसीह के इस उत्कृष्ट भजन के बाद, पॉल इसके आधार पर अधिक विस्तार से बहस करना शुरू करने जा रहा है, ऐसा क्यों है कि पाठकों को इसके बारे में पता होना चाहिए और इस यहूदी धर्म के आगे नहीं झुकना चाहिए, यह झूठी शिक्षा। और ऐसा क्यों है कि उन्हें केवल यीशु मसीह के साथ अपने मिलन पर भरोसा करना चाहिए जो उन्हें वह सब कुछ प्रदान करेगा जिसकी उन्हें आवश्यकता है? पत्र के बाकी हिस्से में, हम इस पर बहस करेंगे और हम इस पर गौर करेंगे।

यह न्यू टेस्टामेंट हिस्ट्री एंड लिटरेचर में डॉ. डेव मैथ्यूसन, फिलिपियंस और कोलोसियंस पर व्याख्यान 22 था।